

Khilji Dynasty Founder Rulers - खिलजी वंश संस्थापक स्थापना (1290-1320)

खिलजी वंश के संस्थापक (1290-1296) - जलालुद्दीन फ़िरोज़ खिलजी, भारत में खिलजी वंश का संस्थापक था। इसका राज्याभिषेक 13 जून 1290 को हुआ था और यह दिल्ली सल्तनत का पहला शासक था जो हिन्दुओं के लिये अच्छा सोचता था।

Khilji Dynasty Rulers खिलजी वंश के रुलर्स

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316) - जलालुद्दीन खिलजी की हत्या करके 19 जुलाई 1296 को अलाउद्दीन खिलजी गद्दी पर बैठ गया था। जलालुद्दीन खिलजी इसका चाचा था और इसने अपने चाचा को मार कर गद्दी अपने नाम की थी।

अलाउद्दीन खिलजी के बचपन का नाम **अली** था। अलाउद्दीन खिलजी के पिता का नाम **शिहाबुद्दीन खिलजी** था। जो जलालुद्दीन खिलजी का भाई था।

अलाउद्दीन खिलजी की सबसे महत्वपूर्ण जीत चित्तौड़ की जीत थी। ये जीत (चित्तौड़ का युद्ध) 1302 से 1303 ईस्वी में हुआ था जिसमें आमिर खुसरो ने भी भाग लिया था।

अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर आक्रमण इसलिए किया था क्योंकि अलाउद्दीन खिलजी की नजर वहां के राजा रत्न सिंह की पत्नी पदमावती पर थी और अलाउद्दीन खिलजी उसे प्राप्त करना चाहता था। राजा रत्न सिंह के सेनापति का नाम **गौरा** था।

अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ का नाम बदलकर अपने बेटे खिज़्र खा के नाम पर खिज़्राबाद रख दिया।

इसके बाद अलाउद्दीन खिलजी ने गुजरात पर आक्रमण किया। उस समय गुजरात का **राजा करण देव** था। राजा करण देव की पत्नी का नाम कमला देवी था और उनके सेनापति का नाम **मलिक काफूर** था। राजा करण देव **वाघेला वंश** का राजा था। इस युद्ध में अलाउद्दीन खिलजी ने राजा करण देव को हरा दिया था और उसे मार भी दिया था। अलाउद्दीन खिलजी, राजा करण देव की पत्नी कमला देवी को उठा कर अपने साथ ले गया और अलाउद्दीन खिलजी ने कमला देवी से शादी कर ली थी। और राजा करण देव के सेनापति को भी वो अपने साथ ले गया और उसको अपना सेनापति बना लिया। मलिक काफूर एक कित्ना (हिजड़ा) था। मलिक काफूर को दक्षिणी भारत को जीतने का काम सौंपा गया और मलिक काफूर ने तेलंगाना की राजधानी वारंगल पर आक्रमण कर दिया और वहां के राजा प्रतापरुद्र ने आत्मसमर्पण कर दिया और 1307 ईस्वी में ये सब हुआ था। और वहां के **राजा प्रतापरुद्र ने 1307 ईस्वी में कोहिनूर हीरा मलिक काफूर को दे दिया**। और मलिक काफूर ने यह हीरा अलाउद्दीन खिलजी को सौंप दिया।

अलाउद्दीन खिलजी को **मार्किट सिस्टम** (बाजार प्रणाली) का जन्मदाता माना जाता है। अलाउद्दीन खिलजी ने वस्तुओं के मूल्य को लम्बे समय तक स्थिर रखा। अलाउद्दीन खिलजी ने मार्किट कंट्रोल सिस्टम के तहत **मंडी** (जहां अनाज का व्यापार होता था) और **सराय ऐ अदल** (जहाँ कपड़ों का व्यापार होता था) की शुरुआत की। इसके साथ साथ घोड़े - दास, मवेशी बाजार और सामान्य बाजार की व्यवस्था की।

अलाउद्दीन खिलजी के पास बहुत बड़ी सेना थी। उसके पास लगभग 4 लाख 75 हजार सैनिक थे और वो उन सबको नकद वेतन देता था। अलाउद्दीन खिलजी के सैनिक 1000, 100, 10 की टुकड़ियों में बटे होते थे और इन **सैनिकों के प्रमुखों को खान, मलिक, अमीर, और सिपहसलार कहा जाता था।**

अलाउद्दीन खिलजी ने **"घोड़ों को दागने"** की प्रणाली शुरू की और **"सैनिकों का हुलिया"** रखने की प्रणाली शुरू की।

घोड़ों को दागना - उस समय अमीरों के पास, जागीरदारों के पास और जनता में भी जो अमीर था उनके पास अपने खुद के घोड़े होते थे तो ऐसे में खुद के घोड़ों की पहचान कैसे हो। तो इसके लिए उसने अपने घोड़ों की पीठ पर कुछ गरम चीज रख देता था जिससे घोड़ों की पीठ पर निशान बन जाता था जिससे वह पहचानता था की ये घोड़ा अपने है।

सैनिकों का हुलिया - अलाउद्दीन खिलजी अपने सैनिकों का स्केच बनाता था जिससे उनकी पहचान हो सके की ये उसके सैनिक है।

अलाउद्दीन खिलजी अपने सैनिकों को 234 टका वेतन देता था प्रतिवर्ष। और इसकी सेना परमानेंट थी।

अलाउद्दीन खिलजी ने अपने समय में पुलिस व्यवस्था को भी मजबूत किया और उस समय पुलिस का मुख्य अधिकारी **"कोतवाल"** कहलाता था।

अलाउद्दीन खिलजी ने **"डाक सिस्टम"** पोस्ट ऑफिस को भी शुरू किया और **राशन प्रणाली** को भी शुरू किया।

अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में **अलाइ दरवाजा , सीरी का क़िला, हौज़ खास, जमातखाना मस्जिद** बनवाई।

अलाउद्दीन खिलजी ने अलाइ दरवाजा, कुतुब मीनार में लगवाया था। अलाइ दरवाजे को **पाप की राजधानी** भी कहा जाता है।

कुतुबमीनार की मरम्मत फिरोज शाह तुगलक ने करवाई।

अलाउद्दीन खिलजी को प्राप्त ख्याति या उपाधियाँ -

अमीर ऐ तुनुक, सिकंदर ऐ शानी, विश्व का सुल्तान, युग का विजेता, जनता का चरवाहा। इसमें सिकंदर ऐ शानी मोस्ट इम्पोर्टेंट है।

अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु 03 जनवरी 1316 को **जलोदर** बीमारी के कारण हुई।

अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद मलिक काफूर राजा बना 1316 में। मलिक काफूर को **हजार दिनारी** भी कहा जाता है। क्योंकि गुजरात के एक व्यापारी **नुसरत खान** ने उसे 1297 ईस्वी में 1000 दिनार में खरीदा था बाजार से। और फिर नुसरत खान ने मलिक काफूर को बेच दिया राजा करण देव को और राजा करण देव ने मलिक काफूर को अपना सेनापति बना दिया था।

मलिक काफूर के बाद क़तुब बुद्दीन मुबारक शाह राजा बना और उसके बाद नसीरुद्दीन खुसरो शाह राजा बना खिलजी वंश में।